卐 ॐ गं गणपतये नमः 卐

!! श्रीराम !!

श्रीराम जय राम जय जय राम

जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल।
चर अरु अचर हर्षजुत राम जनम सुख मूल॥

सम्पादक मण्डल

पं0 दिनेश चन्द्र शर्मा
डॉ0 भगवान दास पटैरया
श्री जगदीश प्रसाद शर्मा 'सरल'

स्मारिका

विक्रमी संवत् 2077 सन् 2020-2021

वार्षिक अंक - 27

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति (पंजीकृत)

पंजीकृत कार्यालय : 593, ग्राम बिजवासन, नई दिल्ली - 110061
स्थानीय कार्यालय : ए-447, सैक्टर - 47, नोएडा - 201 303
वैबसाइट - www.shriramcharit.com, ई-मेल - contactus@shriramcharit.com
दूरभाष - 0120-4305457
चल - 9811056467

मुद्रक : एक्सप्रैस प्रिंट हाउस, गाजियाबाद
फोन : 9350772514
ई-मेल : vinit.tyagi.gzb@gmail.com

पाठकों से निवेदन

स्मारिका का यह वार्षिक अंक–27 आपके हाथ में है। हमारा प्रयास रहा है कि इसमें भगवान श्रीरामजी के आदर्शों को प्रतिपादित करते हुए ऐसे लेख प्रकाशित किए जाएँ, जिनसे समाज में नैतिक मूल्यों का उत्थान हो। इस दिशा में हम कहाँ तक सफल हुए, यह आप ही बता सकते हैं। आशा करते हैं कि आप पत्रिका पढ़कर हमें अपना लेख / अपनी प्रतिक्रिया अवश्य भेजेंगे, ताकि हम अगले अंक में उसे समाहित कर सकें। लेख के संदर्भ में निम्नांकित बिन्दु उल्लेखनीय हैं –

1. **लेख श्रीरामचरितमानस में वर्णित प्रसंगों पर तथा उसका शीर्षक यथासंभव चौपाई, दोहा आदि पर आधारित हो।**
2. लेख में उद्धरित दोहा–चौपाई आदि गीताप्रेस गोरखपुर से प्रकाशित 'श्रीरामचरितमानस' के अनुसार हों। कृपया संदर्भ निम्नांकित प्रकार से अंकित करें।

   जामवंत के बचन सुहाए। सुनि हनुमंत हृदय अति भाए।।

   (5/1/1)

   5/1/1 का आशय है, पाँचवें काण्ड (सुंदरकाण्ड) के पहले दोहे की पहली चौपाई। सातों काण्डों को क्रमशः इस प्रकार से इंगित करें :– 1. बालकाण्ड, 2. अयोध्याकाण्ड, 3. अरण्यकाण्ड, 4. किष्किंधाकाण्ड, 5. सुंदरकाण्ड, 6. लंकाकाण्ड एवं 7. उत्तरकाण्ड।
3. लेख ई–मेल से भेजने हेतु कृपया पृष्ठ सं0 12 देखें। लेख bpateria@gmail.com पर अथवा 9899004263 पर whatsapp या A 447 सैक्टर–47, नोएडा–201303 पर डाक से भी भेज सकते हैं।

स्मारिका के प्रकाशन में विज्ञापन से प्राप्त धन का महत्वपूर्ण योगदान है। अनुरोध है कि आप भी अपने संस्थान का विज्ञापन भेजकर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

विज्ञापन दरें इस प्रकार से हैं –

क्रमांक	विवरण	राशि (रुपयों में)
1.	प्रथम पृष्ठ के पीछे (दूसरा कवर पेज)	35,000
2.	अंतिम पृष्ठ (चौथा कवर पेज)	30,000
3.	अंतिम पृष्ठ के पीछे (तीसरा कवर पेज)	25,000
4.	पत्रिका के अन्दर पूर्ण पृष्ठ	15,000
5.	पत्रिका के अन्दर आधा पृष्ठ	10,000

पाठकों से प्राप्त सहयोग राशि का योगदान भी इसके प्रकाशन में सराहनीय है। इसे भेजने हेतु विवरण निम्नांकित है। ''श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति'' के नाम 'भारतीय स्टेट बैंक, सैक्टर 31, नोएडा की शाखा में चालू खाता सं0 35299035590, ब्रांच कोड : 15971, IFS Code : SBIN0015971। विज्ञापन–प्रकाशन राशि भी इसी खाते में जमा करा सकते हैं।

कृपया सहयोग राशि अथवा विज्ञापन-प्रकाशन राशि भेज कर हमें उपर्युक्त ई मेल या 09899004263 पर फोन या Whatsapp करके सूचित करने का अनुग्रह करें, ताकि तदनुसार प्राप्ति रसीद जारी की जा सके।

अध्यक्ष की ओर से

प्रिय श्रीरामचरितमानस प्रेमियो!

आजकल हमारे देश में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व में सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। समाज में पाश्चात्य संस्कृति का तेजी से प्रभाव बढ़ रहा है। हम अपनी शिक्षा, व्यवहार, समाज के प्रति कर्तव्य, धर्म तथा सेवा भावना से विमुख होकर मानव–जाति का अहित कर रहे हैं। आज प्रेम और भाईचारे का स्थान हिंसा एवं वैमनस्य ने ले लिया है, जिसका प्रमुख कारण अत्यधिक सांसारिक वैभवों को प्राप्त करने की होड़ लगी है। ऐसी विषम परिस्थितियों में भी आपसी सद्भाव बढ़े, जन–जन में ईश्वरीय आस्था तथा भावी पीढ़ी में सुसंस्कार जाग्रत हों, इसी उद्देश्य से 'श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति, नोएडा' की सन् 1990 में स्थापना हुई, जिसका अगस्त 2015 को श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति में विलय हो गया है।

हमारा उद्देश्य श्रीरामचरितमानस पाठ एवं प्रवचनों के माध्यम से मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्रजी के पावन चरित्रों का प्रचार–प्रसार कर समाज एवं धर्म की सेवा करना है। इसके द्वारा हम सभी का कल्याण होगा। यह समिति अपने स्थापना काल से मार्च 2020 तक 479 मानस पाठ एवं प्रवचनों के कार्यक्रम आयोजित करा चुकी है। इसी कड़ी में अब तक अनेक विख्यात कथाकारों जैसे– संत प्रवर श्री विजय कौशलजी महाराज, रामभक्त पं0 मधुकरजी, श्री लक्ष्मीनारायण शर्माजी, डॉ0 पं0 रामगोपाल तिवारी, पं0 बलराम मिश्रजी, आचार्य पं0 बैजनाथ शुक्ला, श्री श्री 1008 श्री प्रेमाचार्यजी, श्री बैजूनाथजी महाराज, आचार्य श्यामसुंदर शरणजी, गोस्वामी रमाकांत चतुर्वेदीजी, मानस माधुरी श्रीमती अखिलेश्वरी देवी, आचार्य अखिलेश्वरानन्द (अंगदजी) महाराज, स्वामी श्री राजेश्वरानन्द सरस्वतीजी, पं0 सुरेन्द्र शास्त्री 'मानस कुसुम' आदि के प्रवचनों का आयोजन किया जा चुका है। ऐसे ही कार्यक्रम भविष्य में भी होते रहें, ऐसी परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है।

विगत 29 वर्षों की भाँति इस वर्ष भी गुरुवार दिनाँक 2 अप्रैल 2020 को श्रीराम जन्ममहोत्सव का आयोजन महाराजा अग्रसेन भवन, सैक्टर–33, नोएडा में किया जाना प्रस्तावित था, किंतु वैश्विक महामारी कोरोना के चलते लॉक डाउन के कारण यह संभव नहीं हो सका। यह स्मारिका भी प्रकाशित नहीं हो सकी; इसका हमें खेद है। कोरोना महामारी से सम्पूर्ण विश्व में जो लोग चिर निद्रा में लीन हो गए उनकी आत्मा की शान्ति के लिए हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं। हम इस समिति की ओर से ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि जिन्होंने इस महामारी में अपनों को खोया है उन्हें धैर्य प्रदान करने की कृपा करें।

इस स्मारिका के प्रकाशन में आर्थिक सहयोग के लिए हम विज्ञापन दाताओं M/S Sushma Enterprises, M/S AVG Logistics Ltd. तथा M/S Max Maintenance का आभार व्यक्त करते हैं।

समिति द्वारा आयोजित मानस पाठ एवं प्रवचन

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति (पंजीकृत) द्वारा समय समय पर श्रीरामचरितमानस अखण्ड पाठ / सुन्दरकाण्ड पाठ एवं प्रवचन (सत्संग) का आयोजन किया जाता रहा है। इस क्रम में **मार्च 2020 तक 479 मानस पाठ एवं प्रवचन आयोजित किये गये।** इसका विवरण समिति की विगत वर्षो की स्मारिका में प्रकाशित किया गया है। पिछले एक वर्ष में 17 पाठ एवं प्रवचन (श्रीराम कथा ज्ञान यज्ञ) आयोजित हुए, जिनका विवरण निम्नांकित है –

क्र.सं.	तिथि	नाम व पता जिनके निवास पर कार्यक्रम आयोजित हुए
1.	15.04.2019	श्री रामपाल सिंह भाटी, ग्रेटर नोएडा
2.	11.05.2019	श्री अंकित शर्मा, सैक्टर – 74, नोएडा
3.	16.05.2019	श्री भिक्कीलाल शर्मा, ए–105, सैक्टर – 20, नोएडा
4.	17.09.2019	नीरसन अकैडमी (नीरज एवं संदीप) छलेरा, सैक्टर – 44, नोएडा
5.	19.10.2019	श्री विपिन कुमार, सी 3 / 149 ए–105, सैक्टर – 36, नोएडा
6.	03.11.2019	केन्द्रिय विद्यालय संगठन कालौनी, सैक्टर – 33, नोएडा
7.	12.11.2019	श्री अनिल खुराना, डी–52, सैक्टर – 36, नोएडा
8.	30.12.2019	श्री वेद प्रकाश शर्मा, ए–36, सैक्टर – 47, नोएडा
9.	18–19.01.2020	पं0 दिनेशचन्द्र शर्मा, ए–447, सैक्टर–47, नोएडा
10.	01.02.2020	श्री के0पी0 सिंह, सी0डी0–47, अंसल हाऊसिंग, गोल्फ लिंक, ग्रेटर नोएडा
11.	07.02.2020	श्री ब्रह्मसिंह पायलेट, एफ 15, सीनियर सीटी होम, ग्रेटर नोएडा
12.	09.02.2020	श्रीमती प्रीति शुक्ला, ए–24, सैक्टर–49, नोएडा
13.	16.02.2020	श्रीमती शोभा तिवारी, ए–446, सैक्टर–49, नोएडा
14.	21.02.2020	डॉ0 भगवान दास पटैरया, डी–11, सैक्टर–36, नोएडा

श्रीरामकथा ज्ञान यज्ञ कार्यक्रम

क्र.सं.	तिथि	कार्यक्रम	स्थान	कथा व्यास
1.	13.04.2019	श्रीराम जन्ममहोत्सव	अग्रसेन भवन, सै0–33, नोएडा	आचार्य कविता कांत वाजपेयी
2.	07.08.2019	तुलसी जयंती समारोह	श्रीराम मन्दिर, सी ब्लॉक, सैक्टर–36, नोएडा	पं॰ रामेश्वरानंद जी महाराज
3.	10–16.12.2019	श्रीराम कथा ज्ञान यज्ञ	श्रीराम मन्दिर, सी ब्लॉक, सैक्टर–36, नोएडा	डॉ0 पं0 राम गोपाल तिवारी

इस अंक में

क्रमांक	विषय	लेखक	पृष्ठ
01.	अध्यक्ष की ओर से		03
02.	समिति के सदस्यों की सूची		07
03.	पाठकों के विचार		09
04.	श्रीराम जन्म–महोत्सव की झलकियाँ	कथा व्यास : आचार्य कविता कान्त वाजपेयी	13
05.	तुलसी जयंती समारोह	कथा व्यास : पं0 रामेश्वरानंद जी महाराज	17
06.	श्रीराम कथा आयोजन	कथा व्यास : डॉ0 पं0 रामगोपाल तिवारी 'मानस रत्न'	21
07.	मोह रोग की चिकित्सा	मानस मर्मज्ञ पं0 श्रीराम किंकर जी उपाध्याय	27
08.	नृप अभिमान मोह बस किंबा	आचार्य डॉ0 रामेश्वर प्रसाद गुप्त	33
09.	जीवित शव	डॉ0 पं0 रामगोपाल तिवारी	41
10.	सब धरा रह जाएगा	पं0 राजेश तिवारी 'मक्खन'	45
11.	चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं	श्री देवेन्द्र शर्मा	47
12.	राखौं देह नाथ केहि खाँगें	डॉ0 एस0एन0 उपाध्याय	55
13.	सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा	पं0 दिनेशचंद्र शर्मा	61
14.	करु परितोषु मोर संग्रामा	श्री अवध किशोर दूबे	67
15.	उच्च्च कोटि की महिला थीं मंदोदरी	जगदीश प्रसाद शर्मा	71
16.	रूप सकहिं नहिं कहि श्रुति सेषा	डॉ0 भगवानदास पटैरया	75
17.	मानस में नाम तत्त्व	कैलाश त्रिपाठी	81

क्रमांक	विषय	लेखक	पृष्ठ
18.	जनकसुता जग जननि जानकी	श्रीमती रीता कश्यप	87
19.	क्यों सुख–बीज न बोता	सरल शास्त्री	91
20.	धरम सेतु पालक तुम्ह ताता	श्री रामजन्म सिंह	93
21.	अभिमानी विद्वान और विद्यावान विद्वान में अन्तर	आचार्य कविता कांत वाजपेयी	97
22.	चित्रकूट गिरि करहु निवासू	पं0 रामनरेश तिवारी	101
22.	कोउ मुख हीन विपुल मुख काहू	राधाकृष्ण पाठक 'अतीत'	105
24.	कहि बल बिरह बेगि तुम्ह आएहु	श्रीमती कुसुम पटैरया, सदस्य	109
25.	वंदे वाणी विनायकौ	डॉ0 शंकर शरण तिवारी	115
26.	राम कीन्ह चाहहिं सोइ होई	तुलसी मानस दर्शन (whatsapp Group)	122
27.	बँदउँ अवध भुआल	तुलसी मानस दर्शन (whatsapp Group)	124
28	श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति का वर्ष 2018–19 का आय–व्यय विवरण		128
29.	श्रीरामचरितमानस के सिद्ध मंत्र		129
30.	श्रीरामशलाका प्रश्नावली		135
31.	विक्रमी संवत् 2077 के व्रत, पर्व, त्योहारों की सूची		139
32.	आरती एवं वन्दना		153
33.	श्रीरामचरितमानस पाठ आयोजन हेतु आवश्यक सामग्री		160

विशेष : स्मारिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं।

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति (पंजीकृत)

सदस्यों की सूची

क्र.सं.	नाम सदस्य	पता	दूरभाष	पद
1.	**पं0 दिनेश चन्द्र शर्मा**	**ए—447, सै0—47, नोएडा—201303**	**9811056467**	**अध्यक्ष**
2.	**श्री जगदीश प्रसाद शर्मा**	**216, जी0जी0 हॉस्टल वाली गली होशियारपुर, सै0—51, नोएडा**	**9311384212**	**उपाध्यक्ष**
3.	**डॉ0 लक्ष्मी नारायण**	**60, मातेश्वरी वार्ड नं0 11, नौ गाँव, (छतरपुर) म0प्र0**	**9893772149**	**उपाध्यक्ष**
4.	**डॉ0 भगवान दास पटैरया**	**डी—11, सै0—36, नोएडा**	**9899004263**	**महासचिव**
5.	**डॉ0 रविन्द्र कुमार शर्मा**	**593, ग्राम बिजवासन, नई दिल्ली—110061**	**9911307799**	**सचिव**
6.	**श्री लीलूराम वर्मा**	**सी—49, सै0—23, नोएडा**	**9312280743**	**संयुक्त सचिव**
7.	**श्री जे0के0 गुप्ता**	**ए—87, सै0—49, नोएडा**	**9810997834**	**कोषाध्यक्ष**
8.	**श्री भिक्की लाल शर्मा**	**ए—105, सै0—20, नोएडा**	**9810836348**	**कार्यकारी सदस्य**
9.	**श्री हुकमचन्द्र शर्मा**	**गली नं0—3C/7, बड चौक, ग्राम निठारी, सै0—31, नोएडा**	**9213999744**	**"**
10.	**श्री सुभाषचन्द्र मित्तल**	**865, जोशी रोड, करोल बाग, दिल्ली**	**9210364442**	**"**
11.	**श्रीमती नीलम श्रीवास्तव**	**एम—126, सै0—25, नोएडा**	**8800439949**	**"**
12.	**श्री सी0एस0 भोगल**	**सी—2/103, सै0—36, नोएडा**	**9811026745**	**"**
13.	**श्री कृष्ण कुमार मिश्रा**	**12/250, कोटेश्वर नगर, पो0 रविशंकर यूनिवर्सिटी, (R.S.U.) जिला—रायपुर—492010**	**9406379229**	**"**
14.	**श्री मांगेराम भारद्वाज**	**ग्राम निठारी, सै0—31, नोएडा**	**9999232019**	**"**
15.	**श्री महावीर प्रसाद त्यागी**	**डी—61, सै0—49, नोएडा**	**9810403264**	**"**
16.	**डॉ0 अंकित अवाना**	**ग्राम निठारी, सै0—31, नोएडा**	**9871775563**	**"**
17.	**श्री अजय कुमार शर्मा**	**ए—447, सै0—47, नोएडा**	**9911220088**	**"**
18.	डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी	1इ, वार्ड नं0 26, लक्ष्मीबाई रोड, देहरादून	09411714660	आजीवन सदस्य
19.	श्री देवेन्द्र सिंह अवाना	B 5/6, सामने C-4/106, सै0—31, नोएडा	9811602397	"
20.	श्री सूरजभान शर्मा	ए—141, सै0—20, नोएडा	8527132634	"
21.	श्री विनोद शर्मा	ए—19, सै0—22, नोएडा	9891117721	"
22.	श्री अश्विनी कुमार भरद्वाज	बी—365, सै0—92, नोएडा—201305	9999533891	"
23.	डॉ0 मनोज कुमार पटैरया	25/3, सै0—1, पुष्प विहार, नई दिल्ली	9868114548	"
24.	श्री देवेन्द्र कुमार रावत,	266, वार्ड नं0 7, स्नेहल नगर, वर्धा (महाराष्ट्र)	9423645351	"
25.	श्री भगवानदास पाठक	मकान नं॰—87, कालीदास नगर, हनुमान रोड़, सूरत — 395006	6352673969	"
26.	श्री रविशंकर चतुर्वेदी	904, D-13, AWHO Sandeep Vihar, Seegehalli Kadugodi, बंगलौर—560067	9945169080	"

क्र.सं.	नाम सदस्य	पता	दूरभाष	पद
27.	श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता	सी–154, सै0–100, नोएडा	9810464009	आजीवन सदस्य
28.	श्री राधेश्याम शर्मा	ए–55, सै0–27, नोएडा	9999930102	"
29.	श्री रामेश्वर दत्त शर्मा	ग्राम निठारी, सै0–31, नोएडा	9953508132	"
30.	श्री रणजीत सिंह विष्ट	एफ–110, सै–20, नोएडा	9650324529	"
31.	श्री भीम सिंह	मोती मैमोरियल, दुर्गा पार्क, पो0–वसुन्धरा ग्राम–दल्लूपुरा, दिल्ली–110096	9810181724	"
32.	श्रीमती कुसुम पटैरया	डी–11, सै0–36, नोएडा	9811201847	"
33.	श्री ए.के. सक्सेना	एच–329, बीटा–A, ग्रेटर नोएडा	9540274589	"
34.	श्री देवीचरन शर्मा	बी–109, सै0–22, नोएडा	9350859122	"
35.	वैद्य अच्युत कुमार त्रिपाठी	एच 129, सै0–41, नोएडा	9868943638	"
36.	श्री वेद प्रकाश बंसल	ए 33, सै0–19, नोएडा	9350732724	"
37.	श्री रघुनाथ प्रसाद शर्मा	जी–63, सै0–27, नोएडा	9899797090	"
38.	श्री सतीश चन्द्र शर्मा	बी 170 B सै0–26,नोएडा	8800969798	
39.	श्री सुरेन्द्र कुमार ठक्कर	बी–69, सै0–52, नोएडा	9891445905	"
40.	श्री लाल मोहन चौधरी	ए–390, सै0–47, नोएडा	9868851639	"
41.	श्री अमर सिंह सेंगर	ए–162, सै0–20, नोएडा	9971885030	"
42.	श्री भू निधि शर्मा	डी–185, सै0–49, नोएडा	9871199809	"
43.	श्री श्रीपाल अवाना	ए–286, सै0–47, नोएडा	9210638386	"
44.	श्री यशपाल सिंह	बी–19, सै0–49, नोएडा	9810339398	"
45.	श्रीमती मधुमालती	बी–69, सै0–52, नोएडा	9891707373	"
46.	श्री विद्याराम अवाना	एच–7, सै0–27, नोएडा	9891960087	"
47.	श्रीमती भारती चतुर्वेदी	बी–2/721, कैलाश धाम, ब्लाक नं0–14 सै0–50, नोएडा	9650990257	"
48.	श्री शिवकुमार शर्मा	ए–100, सै0–33, नोएडा	9871636341	"
49.	आचार्य योगेन्द्र पाण्डे	श्रीराम मन्दिर, सै0–36, नोएडा	9810479542	"
50.	श्रीमती अर्चना शर्मा	बी–2/113, ब्लॉक नं0 8, कैलाशधाम अपार्टमैंट, सै0–50, प्लाट नं ई01, नोएडा	9968422229	"
51.	श्री परमात्मा शरण बंसल	ए–83, सै0–49, नोएडा	9810169329	"
52.	श्रीमती सीमा चौबे	एफ–13, सै0–20, नोएडा	9811323076	"
53.	श्री विपन कुमार	सी–3/149, सै0–36, नोएडा	9868139393	"
54.	श्री नरेश चौहान	एफ–18, सै0–39, नोएडा	9555955599	"
55.	श्री वी0जे0 चौधरी	बाली भगत रोड, बक्सी बाजार, कटक (उड़ीसा) 753001	9090438678	"
56.	श्री नरेन्द्र कुमार चाचान	65–ए, लखीमी पाथ, गुवाहाटी–781028	9435553023	"
57.	श्री मामचंद	ए–406, सै0–47, नोएडा	8368890732	"
58.	श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता	बी–16, सै0–49, नोएडा	9911609460	"
59.	श्री प्रेम सिंह नागर	बी–0002, अजनारा (ग्रैंड हैरीटेज) सै0–74, नोएडा	9266666052	"
60.	श्रीमती बबीता भरद्वाज	बी–365, सै0–92, नोएडा–201305	9999533891	"
61.	श्री वेदप्रकाश शर्मा	ए–36, सै0–47, नोएडा	9821213055	"
62.	श्री देवेन्द्र सिंह तोमर	ए–67, सै0–48, नोएडा	9891944556	"
63.	श्री रणवीर सिंह	ग्राम–हजरतपुर वाजिदपुर, सै0–63, नोएडा	9810634772	"

पाठकों के विचार

समाज के लिए हितकारी पत्रिका

"श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति – स्मारिका" प्राप्त हुई। यह स्मारिका भव्य भावों के उन्मेष से पाठक को आह्लादित करने में पूर्णतः समर्थ है। सद् ज्ञान के बोध के लिये 'स्मारिका' परमोपयोगी तथा मानव समाज के हित में है। पुरुषार्थ चतुष्ट्य सिद्धि तथा षड्सम्पत्ति के लिये यह स्मारिका अतुल एवं अनघ चिन्तन को प्रस्तुत करती है। धर्म के सभी लक्षणों– धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, पवित्रता, इन्द्रिय संयम, बुद्धि, विद्या, तप, सत्य आदि से अवगत कराने में इस पत्रिका के विचारों का महत्त्वपूर्ण सहयोग प्रत्यक्ष है।

आचार्य डॉ0 रामेश्वर प्रसाद गुप्त, दतिया, (म0 प्र0) फोन : 9826249448

धार्मिक श्रद्धा की पराकाष्ठा

मुझे आपकी स्मारिका का 26वां अंक प्राप्त हुआ। इसमें प्रकाशित लेख श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति तथा इसके सम्पादक मंडल की धार्मिक श्रद्धा की पराकाष्ठा का द्योतक हैं तथा जीवन में सन्मार्ग की ओर अग्रसित करने हेतु प्रेरणाप्रद हैं।

मुखराम सिंह पाल, गाजियाबाद। फोन : 9810662757

प्रेरणाप्रद एवं भावात्मक लघु सूक्तियाँ

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका प्राप्त हुई। पिछले अंक भी मैंने पढ़े। इस 26वें अंक की विशेषता यह है कि भक्ति–ज्ञान से परिपूर्ण लेखों के साथ–साथ फिलर्स के रूप में छोटी–छोटी सूक्तियाँ प्रकाशित हुई हैं, जो कि बहुत ही भावात्मक एवं प्रेरणाप्रद हैं। इस हेतु सम्पादक मंडल को हार्दिक साधुवाद।

अरविंद कुमार नायक, नई दिल्ली। फोन : 8588957963

प्ररेणाप्रद सुंदर लेख

प्रति वर्ष की भाँति मुझे इस वर्ष भी स्मारिका का वार्षिक अंक 26 प्राप्त हुआ। इसमें प्रकाशित सभी लेख प्रेरणाप्रद एवं सुंदर हैं। श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति का यह सराहनीय प्रयास है।

डा0 प्रमोद पालीवाल, रोहतक। फोन : 9896531066

संग्रहणीय ग्रन्थ

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका का वार्षिक 26वाँ अंक प्राप्त हुआ। मेरे पास पिछले कई अंक सुरक्षित हैं। समिति की स्मारिका संग्रहणीय ग्रन्थ है, जो ज्ञान–भक्ति–वैराग्य की प्रेरणा प्रदान करता है। इसमें प्रकाशित छोटे–छोटे वाक्य अत्यंत प्रेरणाप्रद एवं हृदयस्पर्शी हैं, जैसे पृष्ठ 24 पर **"आपके मन में यदि किसी एक के लिए भी वैर है तो मन्दिर जाना आपके लिए एक सैर"** प्रकाशित है। यदि केवल इसी को आचरण में उतार सकें तो मानव जीवन धन्य हो जाएगा।

प्रकाश नारायण शर्मा, छतरपुर (मध्य प्रदेश) फोन : 9826568512

स्मारिका प्रकाशन सराहनीय प्रयास

वर्तमान समय के इस भौतिकवाद में ज्ञान–भक्ति–वैराग्य से परिपूर्ण स्मारिका प्रकाशित करना और वह भी 26 वर्षों से अनवरत; एक सराहनीय प्रयास है। भविष्य में भी इसका प्रकाशन ऐसे ही होता रहे, ऐसी प्रभु से प्रार्थना है। श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति के इस पुनीत कार्य की पुनः सराहना करता हूँ।

डा0 अरुण के0 निगम, इंदौर। फोन : 9868134634

राम भक्तों के दर्शन हुए

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका का 26वाँ अंक प्राप्त हुआ। सम्पादक मंडल को साधुवाद ज्ञापित करता हूँ कि ज्ञान–भक्ति से परिपूर्ण लेख इसमें सम्मिलित किए। स्मारिका का कवर पृष्ठ देखते ही मुझे ऐसा लगा कि मैं घर बैठे राम भक्तों का दर्शन कर रहा हूँ। इन चित्रों से यह स्पष्ट हो रहा है कि श्रीराम जन्ममहोत्सव का कार्यक्रम बहुत ही अच्छा रहा होगा। कथा श्रवण करते हुए, आरती करते हुए और प्रसाद ग्रहण करते हुए भक्तगण रामभक्ति में लीन दिखाई दे रहे हैं। अवसर मिला तो कभी मैं भी समारोह में शामिल होकर इस आनंद का अनुभव करूँगा।

बाबूराम तिवारी, गौरिहार (मध्य प्रदेश) फोन : 9754485993

भक्तिभाव से परिपूर्ण आलेख

मैं विगत कई वर्षों से 'श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति' की वार्षिक स्मारिका पढ़ती रही हूँ। विगत सभी अंक और विशेषकर वार्षिक अंक 26 का भी मैंने अवलोकन किया। सभी आलेख भक्तिभाव से परिपूर्ण हैं। ऐसा लगता है कि इन्हें पढ़ते ही जाएँ। कभी ऐसा नहीं लगता कि बस पढ़ लिया। वास्तव में श्रीरामचरितमानस एक ऐसा ग्रन्थ है कि इसे जितनी बार पढ़ें, नए–नए भाव समझ में आते हैं। इसी प्रकार

इस पर आधारित लेख भी बार–बार पढ़ने पर भी ऐसा नहीं लगता कि बस अब क्या पढ़ना। श्रीरामचरितमानस में भी यही लिखा है कि यदि इसे पढ़ने–सुनने से तृप्ति हो गई तो समझिए कि हमने अभी इसका विशेष रसास्वादन ही नहीं किया।

राम चरित जे सुनत अघाहीं। रस बिसेष जाना तिन्ह नाहीं॥

(7/53/1)

श्रीमती रीता कश्यप, दिल्ली। फोन : 9958622992

स्मारिका पढ़कर हर्ष हुआ

श्रीरामचरितमानस स्मारिका का अंक 26 प्राप्त हुआ। इसे पढ़कर मुझे हर्ष हुआ कि चिर प्रतीक्षित ग्रन्थ मुझे मिल गया। एक बार मैंने किसी के पास पिछला अंक देखा था, तब से इच्छा थी कि अगला अंक भी पढ़ूँ। फोन पर समिति को सूचना दी और उक्त अंक भेजा गया। इस हेतु समिति तथा सम्पादक मंडल को हार्दिक साधुवाद। आशा है अगले अंक भी मुझे मिलते रहेंगे। मैंने आद्योपांत पत्रिका को पढ़ा। सभी लेख बहुत अच्छे हैं, राम–गुणगान से परिपूर्ण हैं और अधिक आनंद प्रदान करने वाले हैं। स्मारिका इसी तरह अनवरत भक्ति–गंगा प्रवाहित करती रहे, ऐसी ईश्वर से प्रार्थना है।

गेंदा लाल पटेल, सिमटी नरसिंह पुर, (म.प्र.) फोन : 8085459362

जीभ से नाम-जप विधि

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका पढ़ी, उसमें आपका पता मिला। मैंने राम नाम की महिमा संबंधी लेख पढ़े और श्रीरामचरितमानस के बाल काण्ड के दोहा क्रमांक 22 की तीसरी चौपाई 'जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ। नाम जीहँ जपि जानहिं तेऊ।। पढ़कर विचार आया कि जीभ से राम–नाम जपने की विधि क्या हो सकती है। इस संबंध में आपके आशीर्वचन की आकांक्षा है।

श्रीबल्लभ लाल दास, ग्राम–पो0 चिचरी कानूनगो, वायाराजनगर,
जिला – मधुबनी (बिहार), पिन – 847235

महोदय, आपके प्रश्न – **"जीभ से नाम-जप विधि"** का उत्तर अगले पृष्ठ पर दिया है। संभवतः आप इससे संतुष्ट होंगे। तथापि इस पर अपने विचार दीजिएगा। कृपया अपना फोन नंबर भी अवगत कराएँ।

सम्पादक मंडल, श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति

यह संभव नहीं कि हम सभी को सुखी कर सकें, पर किसी को दुखी न करें, यह हमारे वश की बात है।

जीभ से नाम जपने की विधि

प्रस्तुति : श्री अवध किशोर दूबे, फोन : 8409925271

'जीहँ जपि' का अभिप्राय मन ही मन जाप नहीं, बल्कि हम जिस मंत्र का, भगवान के जिस नाम का जाप करना चाहते हैं उसका लयबद्ध उच्चारण करें। नाम स्मरण नहीं, बल्कि नामोच्चारण है। यह साधना है और जो करता है वह साधक है। साधक नाम जपहिं कैसे? 'लय लाएँ'। तो इसकी विधि क्या है? गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं – कलिकाल तुलसी से सठन्हि हठि राम सनमुख करत को? यह नाम–जप के प्रभाव का परिणाम है। राम नाम को जीभ से जाप करने की विधि उन्हीं से सीखते हैं। किस विधि से करना है।

1. **पुलक गात** (ऐसे सप्रेम कि शरीर का रोम रोम पुलकित हो उठे)
2. **हियँ सिय रघुबीरू** (भाव ऐसा कि लगे कि हृदय में सीताराम जी को धारण किए हुए हैं। मेरे अन्दर भगवद् सत्ता है, प्रभु मेरे हृदय में हैं।)
3. **जीह नामु जपि** (जिह्वा नाम का उच्चारण करे)
4. **लोचन नीरू** (प्रभु प्रेम में आंखों में प्रेमाश्रु आ जाएं)

नाम जीभ जपि, कबीरदास जी के अनुसार इस प्रकार से है –

माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माहिं।
मनवां तो चहुं दिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं।।

अतः मनसा वाचा कर्मणा एकाग्रता आवश्यक है।

अर्थात् हृदय में सीताराम जी का ध्यान, जिह्वा पर राम नाम का उच्चारण, भगवत्प्रेम में शरीर रोमांचित और आंखों में प्रेमाश्रु आ जाएँ तो समझिए कि ये 'नाम जीह जपि' सफल है।

नाम जीहँ जपि जागहिं जोगी। बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी।।
साधक नाम जपहिं लय लाएँ। होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ।।
पुलक गात हियँ सिय रघुबीरू। जीह नामु जप लोचन नीरू।।

(1/22/1 तथा 4 एवं 2/326/1)

सहयोग राशि भेजने वालों को साधुवाद

स्मारिका प्रकाशनार्थ हमें विज्ञापन दाताओं एवं श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति के सदस्यों के अतिरिक्त डॉ० प्रमोद पालीवाल (रोहतक-हरियाणा), श्री बालकृष्ण अग्रवाल (तमिलनाडु), श्री नरेन्द्र कुमार चाचान (गुवाहाटी-आसाम), श्री राजेन्द्र पाल एवं श्रीमती चंद्रमुखी (चंड़ीगढ़), श्री अवध किशोर दुबे (झारखण्ड), श्रीरामजन्म सिंह, श्रीमती माया उपाध्याय (उत्तर प्रदेश), श्री अशोक वर्मा, डॉ० मनोज कुमार पटैरया (दिल्ली) एवं डॉ० विजय स्वरूप बंसल (जोधपुर-राजस्थान) से सहयोग राशि प्राप्त हुई है। हम विज्ञापन दाताओं एवं उपर्युक्त पाठकों को साधुवाद ज्ञापित करते हुए आशान्वित हैं कि भविष्य में भी स्मारिका के प्रचार-प्रसार हेतु इसी तरह सहयोग करके हमारा उत्साहवर्धन करते रहेंगे।

श्रीराम जन्ममहोत्सव की झलकियाँ

कथा व्यास : **आचार्य कविता कांत वाजपेयी**, फोन : 9793774371

वर्तमान समय में भौतिक प्रगति में दिनोंदिन वृद्धि हो रही है, परन्तु समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, अतः यह नितांत आवश्यक है कि भावी पीढ़ी में सुसंस्कार जाग्रत करने का प्रयास किया जाए। इसी उद्देश्य से यह समिति प्रति वर्ष श्रीराम जन्ममहोत्सव का आयोजन करती है, जिसमें श्रीराम कथा के माध्यम से सदाचार, सद्व्यवहार की प्रेरणा प्रसारित की जाती है। इसी शृंखला में 29वाँ कार्यक्रम शनिवार दिनांक 14–4–2019 को महाराज अग्रसेन भवन में प्रातः 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक आयोजित किया गया। इस पावन वेला में कथा व्यास आचार्य कविता कांत वाजपेयी ने श्रीराम जन्म की सरस कथा श्रवण कराके श्रोताओं को भाव–विभोर कर दिया। श्रीराम कथा का संक्षिप्त विवरण पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत है –

अयोध्यापुरी में महाराज दशरथ अपनी प्रजा का पुत्रवत पालन करते हुए उसे आनंदित देखकर स्वयं आनंदित हैं। चौथापन आ गया, तीन रानियाँ हैं, पर कोई संतान नहीं है। श्रवण कुमार के पिता के शाप से वे आश्वस्त थे कि उन्हें पुत्र अवश्य प्राप्त होगा, क्योंकि उन्हें पुत्र वियोग में विलखते हुए प्राण त्यागने का शाप था, पर एक दिन उन्हें चिंता हुई और ग्लानि हुई कि अभी तक मेरे पुत्र नहीं हुआ और वे तुरंत गुरु वसिष्ठ के पास जाते हैं –

एक बार भूपति मन माहीं। भै गलानि मोरें सुत नाहीं।
गुर गृह गयउ तुरत महिपाला। चरन लागि करि बिनय बिसाला।।

(1 / 189 / 1–2)

वसिष्ठजी ने शृंगी ऋषि को बुलवाकर पुत्रेष्टि यज्ञ करवाया। यज्ञदेव के प्रसाद से तीनों रानियाँ गर्भवती हो गईं। भगवान कभी गर्भ में नहीं आते, इसीलिए उन्हें प्रकट होना लिखा है **'भए प्रगट कृपाला'** पर लौकिक दृष्टि से गर्भ में **आना भी लिखा है**–

जा दिन तें हरि गर्भहिं आए। सकल लोक सुख संपति छाए।।

(1 / 190 / 6)

जब सभी ग्रह–नक्षत्र, तिथि–वार अनुकूल हो गए और अखिल ब्रह्माण्डनायक ब्रह्म के प्रकट होने का अवसर आया, तब सर्वत्र हर्षोल्लास का वातावरण हो गया और चैत्र मास शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को भगवान का प्राकट्य हुआ –

नौमी तिथि मधु मास पुनीता। सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता।।

(1 / 191 / 1)

भगवान नवमी तिथि को धराधाम में आए। अंक 9 भी ब्रह्म की तरह पूर्ण है। इसमें किसी भी अंक का गुणा करें तो गुणनफल की संख्याओं का योग हमेशा 9 ही रहेगा। गोस्वामी तुलसीदासजी ने श्रीरामचरितमानस की रचना भी ठीक उसी समय, उस मुहूर्त में की थी, जिस दिन त्रेता युग में भगवान श्रीराम प्रकट हुए –

नौमी भौम बार मधु मासा। अवधपुरीं यह चरित प्रकासा।।
जेहि दिन राम जनम श्रुति गावहिं। तीरथ सकल तहाँ चलि आवहिं।।

(1 / 34 / 5–6)

इस प्रकार से श्रीरामचरितमानस ईश्वर का ग्रन्थावतार है। इसके बालकाण्ड का दोहा क्रमांक 18 (योग 1 + 8 = 9) श्रीसीताराम की अभिन्नता को दर्शाता है अर्थात् देखने में श्रीसीताराम दो हैं, पर वे ठीक उसी प्रकार एक हैं जैसे वाणी और उसका अर्थ; जल और उसकी लहर।

श्रीरामचरितमानस के प्रारंभ में वंदना 9 देवों की की गई है। परशुरामजी ने श्रीराम जी की वंदना में 9 बार 'राम' कहा है। श्रीमद्भगवत् गीता में भगवान के अवतार के विषय में भगवान श्रीकृष्ण का कथन है –

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

(श्रीमद्भगवद्गीता 4 / 8)

अर्थात् साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए, पाप कर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म की स्थापना करने के लिए मैं युग–युग में प्रकट होता हूँ। गोस्वामी तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस में इससे कुछ भिन्न विचार प्रकट किए हैं। दुष्टों के संहार के लिए तो केवल लक्ष्मण ही सक्षम थे यथा –

जग महुँ सखा निसाचर जेते। लछिमनु हनइ निमिष महुँ तेते।।

(5 / 44 / 7)

धर्म की स्थापना केवल भरतजी के आने से हो सकती थी क्योंकि –

जौं न होत जग जनम भरत को। सकल धरम धुर धरनि धरत को।।

(2 / 233 / 1)

तुलसी की दृष्टि में एक ही कारण है अखिल ब्रह्माण्डनायक भगवान श्रीराम के अवतार लेने का और वह है – केवल उनके भक्तों का हित यथा –

ब्यापक बिस्वरूप भगवाना। तेहिं धरि देह चरित कृत नाना।।
सो केवल भगतन हित लागी। परम कृपाल प्रनत अनुरागी।।
तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें। धरउँ देह नहिं आन निहोरें।।

(1 / 13 / 4–5 तथा 5 / 48 / 8)

जब श्रीराम जी के प्रकट होने की वेला आई तब शीतल–मंद–सुगंधित वायु बहने लगी और प्रकृति पूर्णतया अनुकूल हो गई। माँ कौशिल्या के कक्ष में श्रीराम जी प्रकट हुए –

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी।।

(1/192/छंद)

सभी श्रोताओं ने खड़े होकर भगवान के प्रकट होने का यह छंद गाया और फिर बधाई गीतगान हुआ, जिसमें कई श्रोताओं ने नृत्य करके अपना प्रेमभाव दर्शाया।

कथा को आगे बढ़ाते हुए पुष्प वाटिका का वह प्रसंग सुनाया, जिसमें प्रथम बार सीताजी का दर्शन करते हुए श्रीराम जी भाई लक्ष्मण से उनका परिचय इस प्रकार से देते हैं –

तात जनकतनया यह सोई। धनुषजग्य जेहि कारन होई।।

(1/231/1)

गोस्वामी तुलसीदास की मर्यादा की पराकाष्ठा यह है कि इस परिचय देने वाली चौपाई को बोलने पर दोनों होंठ नहीं मिलते हैं अर्थात् अभी सीता जी और राम जी का मिलन नहीं हुआ है, क्योंकि व्यावहारिक रूप से सीताराम जी का मिलन तो धनुष टूटने के बाद ही होगा, पुष्पवाटिका में तो लता ओट से एक–दूसरे का दर्शन किया था।

वनवास काल में श्रीराम–लक्ष्मण–सीता का दर्शन करके ग्रामवासी कहते हैं कि वे माता–पिता धन्य हैं, जिन्होंने इन्हें जन्म दिया और वह नगर एवं देश धन्य है जहाँ से आए हैं –

ते पितु मातु धन्य जिन्ह जाए। धन्य सो नगरु जहाँ तें आए।।
धन्य सो देसु सैलु बन गाऊँ। जहँ जहँ जाहिं धन्य सोइ ठाऊँ।।

(2/122/5–6)

इससे यह शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए कि हम अपनी संतान को इतने अच्छे संस्कार दें कि वे जहाँ भी जाएँ हमारा नाम रोशन करें जिस प्रकार से ग्रामवासी श्रीराम जी के माता–पिता को धन्य–धन्य कह रहे हैं।

इस अवसर पर "श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति" की वार्षिक समारिका का अंक 26 विमोचित हुआ। इस संदर्भ में पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी श्री गणेश शंकर त्रिपाठी ने बताया कि 'श्रीरामचरितमानस' एक ऐसा ग्रन्थ है कि इसे जितनी बार पढ़े, नए–नए भाव समझ में आते हैं। जिस प्रकार सूर्य की किरण प्रिज्म में से प्रवाहित होने पर सात रंगों में विभक्त हो जाती है, उसी प्रकार जब मानस की चौपाइयाँ, सोरठा–छंद–दोहे हमारी बुद्धि रूपी प्रिज्म से गुजरते हैं, तब नए–नए भाव समझ में आने लगते हैं। 'मानस' इतना सरल है कि साधारण पढ़े लिखे लोग इसे समझ सकते हैं और वहीं दूसरा पक्ष यह है कि बड़े–बड़े विद्वान भी इसके गूढ़ अर्थ को समझने में कठिनाई महसूस करते हैं। इस कार्यक्रम में 'अग्रवाल मित्र मंडल' का सहयोग प्राप्त हुआ। श्रीरामायण जी एवं श्रीराम जी की आरती के उपरान्त भोजन–प्रसाद (भंडारे) के साथ ही कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सुमिरत राम हृदयँ अस आवा

प्रस्तुति **: आशना, मदर टैरेसा पब्लिक स्कूल**, गिझौड़, सै0-53, नोएडा
(प्रथम पुरस्कार प्राप्त प्रस्तुति)

हमारे जीवन में कभी–कभी ऐसी उलझन उपस्थित हो जाती है कि हम **'किंकर्तव्यविमूढ़'** हो जाते हैं और यह स्थिति हो जाती है कि इधर कुआँ–उधर खाई तो अब जाएं तो जाएं कहाँ। ऐसी परिस्थिति में श्रीरामचरितमानस की एक कथा में आशा की किरण दृष्टिगोचर होती है। यह कथा इस प्रकार से है – एक बार सती जी के साथ शिवजी कुंभज ऋषि के आश्रम में श्रीराम कथा श्रवण करने गए। सती जी ने श्रीराम कथा मन लगा कर नहीं सुनी, इस कारण जब उन्होंने श्रीराम जी को सीता जी के वियोग में विरह लीला करते देखा तो उन्हें संदेह हो गया। बहुत समझाने पर भी उन्हें विश्वास नहीं हुआ तो शिवजी के परामर्श से वे श्रीराम जी की परीक्षा लेने चल पड़ीं। उन्होंने सीताजी का वेश धारण कर लिया। जब वापस आईं तो झूठ कह दिया कि मैंने कोई परीक्षा नहीं ली। तब शिवजी ने ध्यान लगाकर सब चरित्र जान लिया। इस घटना से शिवजी उलझन में पड़ गए, क्योंकि वे अब सती जी से पत्नी की तरह–व्यवहार नहीं कर सकते थे और सती परम पुनीत हैं, उनका त्याग भी नहीं कर सकते थे –

परम पुनीत न जाइ तजि किएँ प्रेम बड़ पापु।
प्रगटि न कहत महेसु कछु हृदयँ अधिक संतापु।।

(1/56)

इस उलझन को पार करने हेतु शिवजी ने श्रीराम जी के चरण कमलों में प्रणाम करते हुए इस समस्या के समाधान हेतु उनका स्मरण किया। इससे उन्हें समाधान मिल गया –

तब संकर प्रभु पद सिरु नावा। सुमिरत रामु हृदयँ अस आवा।
एहिं तन सतिहि भेट मोहि नाहीं। सिव संकल्पु कीन्ह मन माहीं।।

(1/57/1–2)

अर्थात् शिवजी ने श्रीराम जी का स्मरण करते हुए उनके चरणों में प्रणाम किया, मानो वे शरणागत होकर इस समस्या के समाधान हेतु उनसे याचना कर रहे हों और तब उन्हें यह स्फुरणा हुई कि इस शरीर से अब सती जी से पत्नी के रूप में नहीं मिलूँगा। उन्होंने इस स्फुरणा का दृढ़ संकल्प के रूप में पालन किया।

अतः जब हमारे जीवन में ऐसी कोई उलझन उत्पन्न हो, तब हमें ईश्वर का स्मरण करके उन्हीं से समाधान की प्रार्थना करनी चाहिए और फिर वे जैसी स्फुरणा प्रदान करें तदनुसार दृढ़ संकल्प लेकर उस मार्ग पर चलना चाहिए। ईश्वर द्वारा प्रेरित मार्ग के अनुसरण से निश्चित रूप से हमारा कल्याण होगा।

तुलसी जयंती समारोह

कथा व्यास : **पं0 रामेश्वरानंद जी महाराज (राष्ट्रीय मानस प्रवक्ता)**
फोन : 7498482162

श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदास विरचित श्रीरामचरितमानस भगवान शंकर की प्रेरणा से सृजित एक ऐसा दिव्य महाकाव्य है, जो सम्पूर्ण मानव समाज के लिए समान रूप से कल्याणकारी है। इसमें वर्णित आदर्शों के अनुपालन से इहलोक और परलोक दोनों सुधर सकते हैं। समाज के हर आयु के, हर वर्ग के लिए जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना करने की सामर्थ्य दिलाने वाले सूत्र इस महाकाव्य में विद्यमान हैं। ऐसे महाकवि, समाज सुधारक एवं अखिल ब्रह्माण्डनायक भगवान श्रीराम का ग्रन्थावतार कराने वाले के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करने हेतु उनके जन्म दिन पर उन्हें एवं उनके आराध्य श्रीराम का स्मरण करना आवश्यक है। इसी उद्देश्य से यह समिति **'तुलसी जयंती समारोह'** आयोजित करती आ रही है। इसी शृंखला में श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति एवं गीता रामायण समिति, नोएडा के संयुक्त तत्वावधान में श्रावण शुक्ल सप्तमी संवत् 2076 तदनुसार बुधवार दिनांक 07 अगस्त 2019 को श्रीराम मंदिर, सी ब्लॉक, सैक्टर–36, नोएडा में छटवाँ 'तुलसी जयंती समारोह आयोजित हुआ। इस पावन वेला में राष्ट्रीय मानस प्रवक्ता पं0 रामेश्वरानंद ने 'रघुनंदन राघव राम हरे। सीताराम हरे' की मधुर रामधुन से 'गोस्वामी तुलसीदास' के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदास विरचित श्रीरामचरितमानस के कुछ रोचक प्रसंग श्रवण कराए, जिन्हें सुनकर श्रोतागण मंत्रमुग्ध होकर करतल ध्वनि से उनकी सराहना करते रहे। उनके प्रवचन के कुछ अंश पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत हैं।

(1) भगवन्नाम में पापों को शमन करने की इतनी अधिक शक्ति है कि पापी उतने पाप भी नहीं कर सकता। इसका तात्पर्य यह नहीं कि हम पाप करते जाएं और भगवन्नाम स्मरण करते जाएँ। तात्पर्य यह है कि पापी से पापी भी भगवन्नाम के सहारे अपना कल्याण कर सकता है। यही तथ्य श्रीरामचरितमानस में कई प्रसंगों में दर्शाया गया है। मुगल शासन काल में हमारी संस्कृति का दिनोंदिन ह्रास हो रहा था तथा पुजारियों / पंडितों में पाखण्ड बढ़ता जा रहा था। सभी अपने निहित स्वार्थों की सिद्धि में तल्लीन थे। ऐसे विकट समय में भारतीय संस्कृति की रक्षा गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस से हुई। वास्तव में तुलसीदास जी ने केवल लेखनी चलाई, श्रीरामचरित तो शिवजी ने रचा और तुलसीदास जी को प्रेरणा देकर लिखवाया –

रचि महेस निज मानस राखा। पाइ सुसयउ सिवा सन भाषा।।
भनिति मोरि सिव कृपाँ बिभाती। ससि समाज मिलि मनहुँ सुराती।।
संभु प्रसाद सुमति हियँ तुलसी। रामचरितमानस कबि तुलसी।।

(1/35/11, 1/15/8 तथा 1/36/1)

श्रीराम कथा की रचना शिवजी ने की, किन्तु उसे अपने मन में ही रखा और उचित समय पाकर वह 'रामचरित' पार्वती जी को सुनाया। पार्वती जी के मन में यह शंका रह गई थी कि अखिल ब्रह्माण्ड नायक उस निराकार परब्रह्म ने नर शरीर क्यों धारण किया। इसी के उत्तर में शिवजी ने उन्हें श्रीरामचरित सुनाया –

कथा जो सकल लोक हितकारी। सोइ पूछन चह सैलकुमारी।।
प्रथम सो कारन कहहु बिचारी। निर्गुन ब्रह्म सगुन बपु धारी।।
धन्य धन्य गिरिराजकुमारी। तुम्ह समान नहिं कोउ उपकारी।।
पूँछेहु रघुपति कथा प्रसंगा। सकल लोक जग पावनि गंगा।।

(1/107/6, 1/110/4 तथा 1/112/6–7)

(2) श्रीरामचरितमानस में धर्म–अधर्म, पाप–पुण्य, सत्य–असत्य जैसे संवेदनशील तथ्यों की ऐसी विवेचना की गई है जो सर्वमान्य है। 'मानव धर्म' की जो व्याख्या इस महाकाव्य में है, उसके अनुशरण करने से विश्व में शांति स्थापित हो सकती है। सत्य के समान दूसरा धर्म नहीं है। दूसरे का जिसमें हित हो, उस कार्य के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरों को कष्ट देने के समान कोई पाप नहीं है। अहिंसा परम धर्म है और दूसरे की निंदा के समान कोई पाप नहीं है। यथा –

धरमु न दूसर सत्य समाना। आगम निगम पुरान बखाना।।
पर हित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।
परम धर्म श्रुति बिदित अहिंसा। पर निंदा सम अघ न गरीसा।।

(2/95/5, 7/41/1 तथा 7/121/22)

सत्य क्या है? इसकी परिभाषा स्वयं शिवजी ने अपने अनुभव से पार्वती जी को बताई कि हरि भजन ही सत्य है और जगत तो स्वप्न की तरह है।

उमा कहउँ मैं अनुभव अपना। सत हरि भजनु जगत सब सपना।।

(3/39/5)

हमारे समाज की विडंबना यह है कि जीवन का यह परम सत्य 'राम नाम सत्य है' हमें समय पर नहीं बताया जाता है यथा –

शैशव में सिखाया, धरा-धाम सत्य है।
यौवन में बताया गया, अर्थ-काम सत्य है।।
पिंजड़े का पंछी जब, पिंजड़े को छोड़ चला।
अन्त में सुनाया गया, राम नाम सत्य है।।

(3) श्रीरामचरितमानस में आध्यात्मिक तथ्यों की सरल–सटीक परिभाषा के साथ–साथ राष्ट्रप्रेम की भावना जाग्रत करने के भी सूत्र हैं, क्योंकि यदि राष्ट्र सुरक्षित है, तो हमारा धर्म सुरक्षित है और यदि हमारा

धर्म सुरक्षित है तो हम सुरक्षित हैं। स्वयं श्रीराम जी ने कहा है कि मुझे मेरा राष्ट्र अर्थात अवध वैकुण्ठ से भी अधिक प्रिय है –

जद्यपि सब बैकुंठ बखाना। बेद पुरान बिदित जगु जाना।।
अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ। यह प्रसंग जानइ कोउ कोऊ।।

(7/4/3–5)

कण–कण में व्याप्त ईश्वर को निराकार कहा गया है। निराकार का आशय है कि जिसका कोई आकार न हो, किन्तु इसके दो और अर्थ हैं– जिसके आकार का कोई और न हो और जिससे और सभी आकार बनते हों। इन तथ्यों की पुष्टि 'मनु–शतरूपा कथा' से होती है। 'मनु' अपने पुत्र को राजपाट सौंपकर पत्नी शतरूपा के साथ नैमिषारण्य में तप करने चले जाते हैं। उनके उग्र तप को देखकर ब्रह्मा–विष्णु–महेश कई बार उनके पास आए और वर माँगने को लुभाया, किन्तु वे विचलित नहीं हुए, क्योंकि वे तो उस निराकार ब्रह्म को देखना चाहते थे, जिनसे ब्रह्मा–विष्णु–महेश भी उत्पन्न होते हैं। कालान्तर में ब्रह्मवाणी होती है कि वर माँगो– वर माँगो।

इस आकाशवाणी को सुनकर मनु महाराज कहते हैं कि हमें दर्शन दीजिए। उनकी प्रार्थना पर भगवान इस प्रकार प्रकट होते हैं –

भगत बछल प्रभु कृपानिधाना। बिस्वबास प्रगटे भगवाना।।

(1/146/8)

"बिस्वबास" का आशय है कण–कण में व्याप्त निराकार ईश्वर जो अब साकार रूप में मनु–शतरूपा को दर्शन दे रहे हैं। जब भगवान ने उनसे वर माँगने को कहा तो उन्होंने उन्हीं को माँग लिया अर्थात् उन्होंने यह वर माँगा –

दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहउँ सतिभाउ।
चाहउँ तुम्हहि समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ।।

(1/149)

भगवान ने कहा कि मैं अपने समान कहाँ खोजूँ क्योंकि मेरे समान तो मैं ही हूँ। मैं ही तुम्हारा पुत्र बनकर आऊँगा –

आपु सरिस खोजौं कहँ जाई। नृप तव तनय होब मैं आई।।

(1/150/2)

इससे यह स्पष्ट होता है कि निराकार का एक आशय यह भी है कि जिसके आकार का और कोई दूसरा न हो।

मनु महाराज ने उस निराकार ईश्वर की प्रार्थना में कहा था कि हम उस स्वरूप का दर्शन करना चाहते हैं, जिनसे ब्रह्मा–विष्णु–महेश त्रिदेव उत्पन्न होते हैं –

संभु बिरंचि बिष्नु भगवाना। उपजहिं जासु अंस तें नाना।।

(1 / 144 / 6)

ब्रह्मा जी सृष्टि का निर्माण करते हैं और ब्रह्मा उस निराकार ईश्वर से उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार से यह भी सिद्ध होता है कि निराकार का एक अर्थ यह भी है कि जिससे और सभी आकार बनते हैं।

(5) भगवान अपने भक्तों की रक्षा न खरारि बनकर करते हैं, न त्रिशरारि और न मुरारि बनकर करते हैं, वे अपने भक्तों की रक्षा महतारी बनकर अर्थात् माँ की तरह करते हैं। नारद जी भगवान श्रीराम के पास जाकर पूँछते हैं कि जब उन्होंने विवाह करना चाहा, तब आपने क्यों नहीं करने दिया। इसके उत्तर में भगवान ने कहा कि भक्त मेरे लिए अबोध बालक की तरह हैं और उनकी रक्षा मैं इस प्रकार से करता हूँ –

सुनु मुनि तोहि कहउँ सहरोसा। भजहिं जे मोहि तजि सकल भरोसा।।
करउँ सदा तिन्ह कै रखवारी। जिमि बालक राखइ महतारी।।

(3 / 43 / 4–5)

इस कार्यक्रम में "मदर टेरेसा सीनियर सैकेन्ड्री स्कूल, गिझौड़, सैक्टर–53, नोएडा तथा सर्वहितकारी शिक्षा निकेतन पब्लिक स्कूल, निठारी, सैक्टर–31, नोएडा के विद्यार्थियों ने तुलसीदासजी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए श्रीरामचरितमानस के कुछ प्रसंगों पर प्रस्तुति की। इस प्रतियोगिता में मदर टेरेसा सीनियर सैकेन्ड्री स्कूल, गिझौड़ की आशना को प्रथम तथा हिमांशु को तृतीय पुरस्कार एवं सर्वहितकारी शिक्षा निकेतन की नैना को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किए गए। सभी प्रतिभागियों को तथा उनकी प्रिंसिपल / अध्यापक / अध्यापिका को पुरस्कार स्वरूप 'श्रीरामचरितमानस' की प्रतियाँ प्रदान की गईं। सभी प्रतिभागियों द्वारा की गई प्रस्तुति को इस अंक में उनके नाम से प्रकाशित किया गया है।

कार्यक्रम के सफल आयोजन में श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष पं0 दिनेश चन्द्र शर्मा एवं सभी सदस्यों का तथा गीता रामायण समिति के महासचिव श्री सी.एस. भोगल तथा मंदिर के प्रधान पुजारी आचार्य श्री योगेन्द्र पाण्डेय का सराहनीय सहयोग रहा तथा पत्रकार श्री राजेश बैरागी ने मंच संचालन किया। इस हेतु हम उनका आभार व्यक्त करते हैं और आशान्वित हैं कि भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों में हमारा सहयोग करते रहेंगे। इस समति के महासचिव डॉ0 भगवान दास पटैरया द्वारा 'धन्यवाद ज्ञापन' प्रस्तुत किया गया। श्रीरामजी की आरती एवं भोजन प्रसाद के साथ ही समारोह सम्पन्न हुआ।

अगर कोई पूछे जिन्दगी में क्या खोया और क्या पाया, तो कहना, जो कुछ खोया वो मेरी नादानी थी और जो भी पाया वो प्रभु की मेहरबानी थी, खूबसूरत रिश्ता है मेरे और भगवान के बीच में, ज्यादा मैं माँगता नहीं और कम वो देता नहीं।